Tender Heart High School, Sec.-33-B, Chd.

कक्षा - चौथी शिक्षिकाएँ - सुमन शर्मा, रेमा रानी
विषय - हिंदी साहित्य ('पाठ-13 चतुर चित्रकार') -1
कवि - रामनरेश त्रिपाठी
पुस्तक - नवतरंग-4

सुप्रभात प्यारे बच्चो!

आज हम कक्षा चौथी की पाठ्य पुस्तक नवतरंग-4 के पृष्ठ-97 पर दिए पाठ-13 'चतुर चित्रकार' कविता को पढ़ेंगे।

बच्चो! शेर जंगल का राजा कहलाता है। अगर शेर को सामने खड़ा देख लें, तो लोगों के होश ही उड़ जाते हैं। ऐसी परिस्थिति में चतुराई और सूझबूझ से काम लेने में बुद्धिमानी होती है। संकट के समय हमें साहस और धैर्यपूर्वक कोई उपाय सोचकर ही स्वयं की रक्षा करनी चाहिए। आइए! अब हम इस कविता के कुछ अंश को पढ़ते हैं।

एक बार एक चित्रकार सुनसान जगह में चित्रकारी करने के लिए गया और वहाँ चित्र बनाने लगा। चित्र बनाते समय वह अपनी कला में डूब गया। इतने में वहाँ जंगल का राजा शेर आ गया। उसे देखकर चित्रकार के एकदम होश उड़ गए। चित्रकार तो नदी, पेड़, पत्तों का चित्र बना रहा था लेकिन अब शेर को देखकर उसका जोश, उमंग खत्म हो गई। घबराए हुए चित्रकार में कुछ हिम्मत आई। उसने शेर को चुपचाप देखा और वह उससे (शेर से) बोला, हे! जंगल के राजा, आप यहाँ बैठ जाइए। मैं आपका सुंदर चित्र बना देता हूँ! चित्रकार की बात सुनकर वह शेर जिसका नाम डकरू-मकरू था, अपने सारे अंग समेटकर बैठ गया और चित्रकार की ओर बड़े ध्यान से देखने लगा। इस प्रकार शेर बड़े आराम से बैठकर अपना चित्र बनवाने लगा।

DATE 9.12.24
PAGE No 2

कक्षा - चौथी शिक्षिकाएँ - सुमन शर्मा, रोमा रानी
विषय - हिंदी साहित्य (पाठ-13 'चतुर चित्रकार') - 1

बच्चो! अब मैं कविता की पंक्तियाँ लिखूँगी।

चित्रकार सुनसान जगह में, बना रहा था चित्र,
इतने में वहाँ आ गया, जंगल का राजा मित्र।

एक चित्रकार सुनसान जगह में चित्र बना रहा था।
इतने में वहाँ जंगल का राजा शेर आ गया।

उसे देखकर चित्रकार के, तुरंत उड़ गए होश,
नदी, पहाड़, पेड़, पत्तों का, रह गया न कुछ जोश।

जैसे ही चित्रकार ने शेर को देखा तो तुरंत उसके होश उड़ गए।
वह नदी, पहाड़, पत्तों का चित्र बना रहा था लेकिन अब
शेर को देखने के बाद समाप्त हो गया।

फिर उसको कुछ हिम्मत आई, देख उसे चुपचाप,
बोला - सुंदर चित्र बना दूँ, बैठ जाइए आप।

शेर चुपचाप था। उसे इस स्थिति में देखकर चित्रकार
में कुछ हिम्मत आई और उसने शेर से कहा कि
आप यहाँ बैठ जाइए, मैं आपका चित्र बना देता हूँ।

डकरू - मकरू बैठ गया वह, सारे अंग बटोर,
बड़े ध्यान से लगा देखने, चित्रकार की ओर।

डकरू - मकरू नाम का शेर अपने सारे शरीर को
समेट कर बैठ गया और अपना चित्र बनवाने के लिए
चित्रकार की ओर ध्यान से देखने लगा।

बच्चो! आज हम इस कविता को यहीं तक
पढ़ेंगे। पाठ का अगला भाग अगले हफ्ते पढ़ेंगे। अब मैं
आपको गृहकार्य दे रही हूँ।

गृहकार्य :- सब बच्चे इस कविता को दो-तीन बार
पढ़ेंगे व याद करेंगे। शब्दों के अर्थ याद
करेंगे।

(अंतिम पृष्ठ - 2)

Scanned with CamScanner